गुणों की भरमार : नीम

एन. के. बौहरा

नीम जिसका वैज्ञानिक नाम *एज़ाडिरेक्टा इंडिका* है, मैलिएसी कुल का वृक्ष है। बारहों महीने हरा-भरा रहने वाला यह वृक्ष संसार के विभिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है। यह पाकिस्तान, श्रीलंका, थाइलैण्ड, मलेशिया, इंडोनेशिया, ईरान, अमरीका, जर्मनी, लेटिन अमरीका, यमन आदि देशों में भी पाया जाता है। भारत के अलग-अलग प्रदेशों में भी इसके नाम अलग-अलग हैं। अंग्रेज़ी में इसे मारगोसा, गुजराती में निम्बार्डो, कन्नड में आरिस्ट्रा नीम्बा, तेलुगु में वीप्पाचेटू और हिन्दी में नीम के नाम से जाना जाता है।

भारतीय संस्कृति में नीम हमेशा से एक पूजनीय वृक्ष रहा है। माना जाता है कि जब स्वर्ग से अमृत ले जाया जा रहा था, तब इसकी कुछ बूंदें इस वृक्ष पर पड़ गई थीं। अधिकांश लोग वर्षा के दौरान इसकी पत्तियां खाते हैं, ताकि वे कई बीमारियों से बचे रहें।

नीम में पुष्पन मार्च से मई के बीच होता है तथा इसके फल मई से जुलाई के बीच परिपक्व हो जाते हैं। तकरीबन पूरे भारत में पाया जाने वाला नीम मध्यम ऊंचाई का पेड़ है। इसे बीजों द्वारा या कलम रोपण से लगाया जा सकता है, हालांकि कलम रोपण अधिक सफल रहता है। यह सूखी, पथरीली, रेतीली, उथली, गहरी या चिकनी, सभी प्रकार की भूमि में उग सकता है। इसके अतिरिक्त नीम, क्षारयुक्त भूमि में भी पैदा हो सकता है और 0 डिग्री से 45 डिग्री सेल्सियस तक तापमान सह सकता है।

नीम के सामान्य उपयोग

नीम का उपयोग सदियों से जन सामान्य द्वारा किया जा रहा है। नीम की लकड़ी को ईंधन के रूप में, इसकी हरी एवं पतली टहनी को दातुन के रूप में, इसके पत्तों का धुआं मच्छरों को भगाने के लिए व इसकी गोंद दवा के रूप में इस्तेमाल में लायी जाती है। अनाज एवं चारोली की कीटों से रक्षा के लिए गोदामों एवं अन्य संग्रह पात्रों में नीम के पत्तों का उपयोग किया जाता है। इसके फल से बीज निकालने के बाद जो गूदा बचता है, उसे सड़ाकर मीथेन गैस तैयार की जाती है जिसका ईंधन के रूप में उपयोग होता है।

नीम के बीजों में लगभग 40 प्रतिशत तेल होता है। यह तेल दीए जलाने में, मशीनों की ऑइलिंग करने, साबुन, दवाइयां, कीटनाशक रसायन आदि बनाने में काम आता है। इसकी खली को खाद, जानवरों के उत्तम चारे तथा एक कीटनाशक के रूप में उपयोग किया जाता है। नीम की छाल में टैनिन नामक तत्व पाया जाता है, जिसका उपयोग चमड़ा पकाने में किया जाता है। नीम की लकड़ी बहुत मज़बूत व टिकाऊ होती है जिस पर कीड़े नहीं लगते हैं। यही कारण है कि इसकी लकड़ी का उपयोग मकान, फर्नीचर एवं खेती के औज़ार बनाने में किया जाता है। इसके अलावा नीम के पत्तों एवं बीजों में एक बहुपयोगी रसायन ऐज़ाडिरेक्टीन भी पाया जाता है।

व्यापारिक महत्व

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI) ने सर्वप्रथम 1960 में पता लगाया कि नीम में कई प्रकार के रसायन पाए जाते हैं। ऐज़ाडिरेक्टीन व कई अन्य रसायनों की खोज होने और उनकी उपयोगिता जान लेने के बाद भारत में एवं विदेशों में नीम का व्यापारिक महत्व काफी बढ़ गया है। आज नीम के कई व्यावसायिक रूप नीम पेस्ट, नीम साबुन, नीम तेल,